आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015–2017

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : चौदहवां अंक : दसवां फरवरी–2017

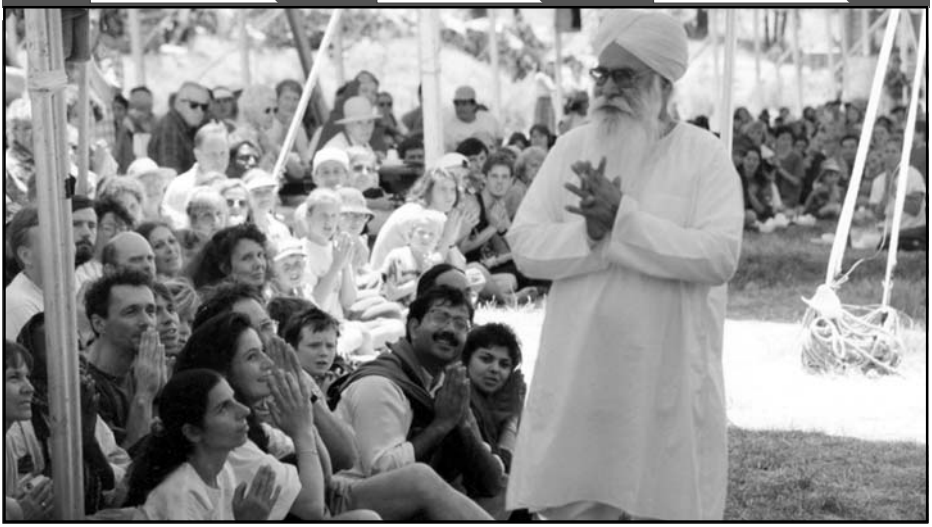

6 सवाल–जवाब

19 सुखों–दुखों की नगरी

29 रक्षक

31 अमृतवेला

33 आवश्यक सूचना

34 धन्य अजायब

संपादक–**प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
99 50 55 66 71 (राजस्थान)
98 71 50 19 99 (दिल्ली)

उप संपादक–**नन्दनी**
सहयोग–**ज्योति सरदाना**
व **परमजीत सिंह**

विशेष सलाहकार–**गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04
99 28 92 53 04

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 फरवरी 2017 –179– मूल्य – पाँच रुपये

6th FEBRUARY

HAPPY BIRTHDAY MAHARAJ KIRPAL

मेरा सतगुरु सोहणा आ गया

मेरा सतगुरु, मेरा सतगुरु सोहणा, आ गया,
मैनूं सिध्धे रस्ते, पा गया, (2)
मेरा सतगुरु,

1. अज भागां भरया, दिन आया, असीं याद गुरु दी, गा रहे,
उस कुल मालिक, निरंकार दा, अज जन्म दिहाड़ा, मना रहे, (2)
मेरा सतगुरु सोहणा .....

2. ओह दुनियां दे कोने–कोने ते, सच्चे नाम दा होका, ला गया,
ओह बेटा बण के, सावन दा, मींह अमृत दा, बरसा गया, (2)
मेरा सतगुरु सोहणा .....

3. पिता हुक्म सिंह दा, लाडला, ओहदा नाम सन्त, कृपाल है,
माता गुलाब देवी दा, जाया ऐ, पर दुनियां ते इक, मिसाल है, (2)
मेरा सतगुरु सोहणा .....

4. लक्खां होण वधाईयां, संगत जी, मेरे गुरु दा भंडारा, आ गया,
मैं 'अजायब' सी, भुल्ल गया, फड़ सीधे रस्ते, पा गया, (2)
मेरा सतगुरु सोहणा .....

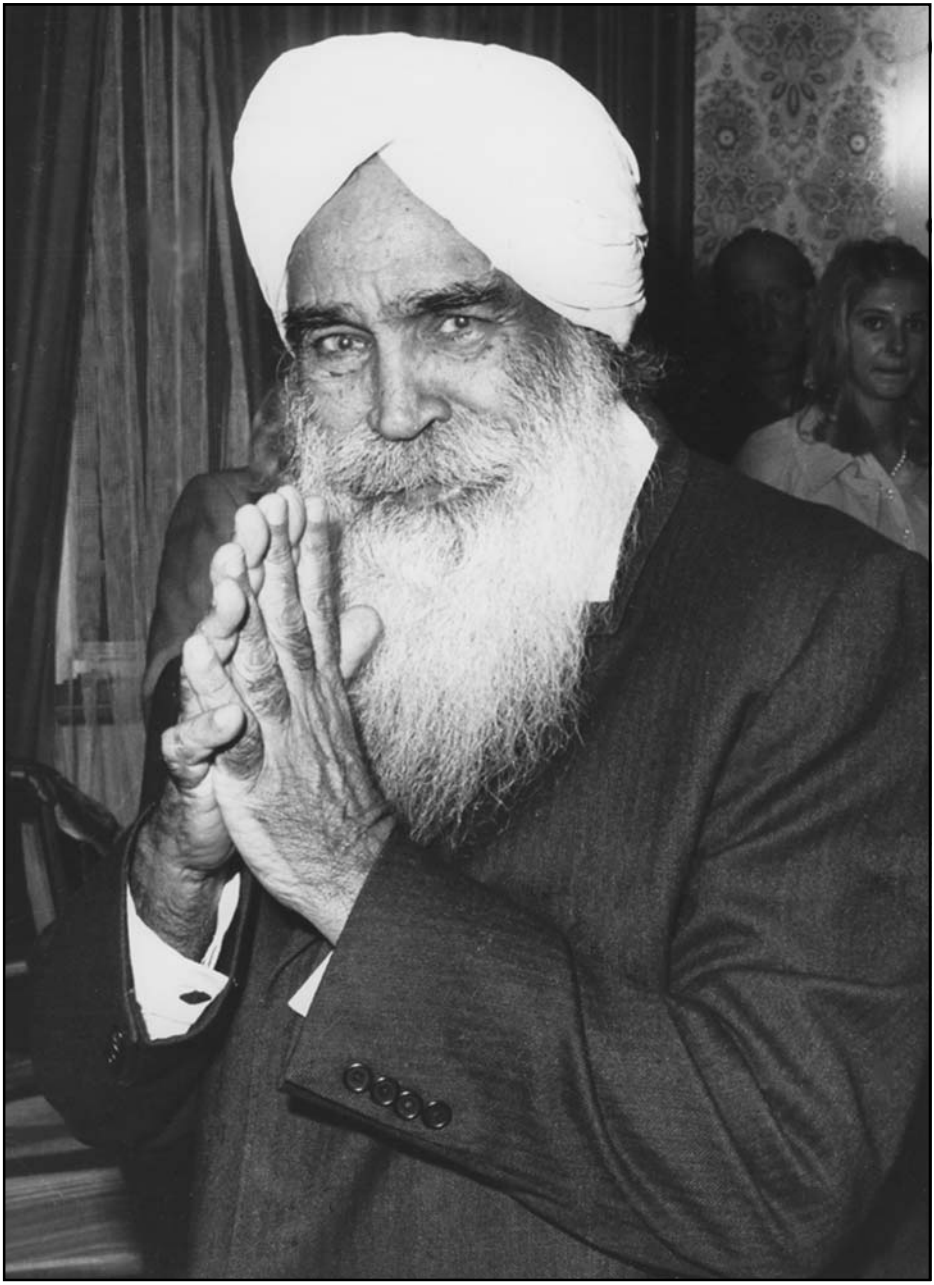

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब

मियामी, फ्लोरिडा

एक प्रेमी : *महाराज जी! हम लोग गंभीरता से आपके लिए समर्पित हैं मैं चाहता हूँ कि आप हमें समझाएं कि हम समय-समय पर होने वाले व्यक्तिगत झगड़ो को कैसे टाल सकते हैं? मुझे लगता है कि हममें से ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि अगर हम नियमों का पालन करें तो हम एक-दूसरे से नहीं झगड़ेंगे। मैं इस बारे में ज्यादा विस्तार से जानना चाहता हूँ?*

महाराज कृपाल: मैं ग्रुप लीडर समेत सभी को एक ही निर्देश देता हूँ कि आप अपना आत्मनिरिक्षण करें अगर आप आत्मनिरिक्षण के लिए डायरी रखें और उसके अनुसार जिंए तो कोई झगड़ा नहीं होगा। किसी का बुरा न सोचें। आपके कठोर शब्द दूसरों को चोट पहुँचा सकते हैं यही नफरत का मूल कारण है। मैं अभी बता रहा था कि आप एक अन्धे इंसान से कहते हैं, 'ओ अन्धे आदमी!' आप उससे इस तरह भी पूछ सकते हैं, ''प्यारे दोस्त! आपने अपनी आँखों की रोशनी कब खोई?'' इन दोनों में फर्क है। एक शब्द चोट पहुँचा रहा है और दूसरा नहीं।

अगर आपको किसी में कुछ गलत लगता है तो उसे एकान्त में उस बारे में बताए, ''प्रिय दोस्त! यह ठीक नहीं लगता।'' लेकिन इसे समाचार न बनाएं, पार्टियाँ न बनाएं। दूसरों के कानों से सुने या आँखों से देखे पर विश्वास न करें लेकिन हम क्या करते हैं? पहले हम कुछ करते हैं फिर जो हमसे जुड़े हैं वे पार्टी बना लेते हैं और दूसरों तक कहानियाँ पहुँचाते हैं। जैसे संक्रमण होने से बीमारी होती है, संक्रमण फैलता है और वहाँ पार्टियाँ बन जाती हैं।

दूसरों का बुरा न सोचें, बुरा न सुनें, बुरा न देखें और बुरा न कहें तब स्वाभाविक ही अगर दूसरों में कुछ गलत होगा तो उसे दोस्ताने तरीके से बताएं। मैं सोचता हूँ कि यही झगड़े का मूल कारण है। हम आमतौर पर कहते हैं कि हम प्रभाव में हैं, मैं आपको बाहर निकाल दूँगा। आप कौन होते हैं किसी को बाहर निकालने वाले? यह गुरु का सतसंग है। इसमें सभी गुरु के कारण उपस्थित हैं अगर कोई ऐसा कहता है तो वह गुरु की आज्ञा का पालन नहीं कर रहा। ग्रुप लीडर सतसंगियों की रखवाली और मदद के लिए हैं।

एक-दूसरे से प्रेम करें अगर आप एक-दूसरे से प्रेम करेंगे तो गलतियाँ हो सकती हैं लेकिन प्रेम माफ करना और भूलना जानता है। अगर आप इस निर्देश के अनुसार चलेंगे तो कोई झगड़ा नहीं होगा। हमारे शब्द प्यार भरे होने चाहिए। प्यार भरे शब्दों की कोई कीमत नहीं होती लेकिन प्यार भरे शब्द नम्रता में रंगे होने चाहिए। हम कभी-कभी जोश में कहते हैं, ''मैं यह कर सकता हूँ।'' ऐसी चीजें कष्ट पैदा करती हैं।

दूसरों के प्रयत्न की प्रशंसा करें। उन्होंने छोटा-बड़ा जो भी प्रयत्न किया है अगर आप उसकी प्रशंसा करेंगे तो दूसरे आदमी को आपकी मदद करने की प्रेरणा मिलेगी उसमें गलतियाँ हो सकती हैं उन गलतियों को अलग से एकांत में बताया जा सकता है लेकिन समाचार न बनाएँ क्योंकि इससे पार्टियाँ बनती हैं।

मैं तो यही कहूँगा कि ग्रुप लीडर को आपके साथ माता की तरह व्यवहार करना चाहिए। ग्रुप लीडर गुरु नहीं हैं उसे आपकी मदद के लिए चुना गया है। उससे भी कुछ गलतियाँ हो सकती हैं लेकिन इससे निपटने का तरीका उनसे दूर जाना नहीं। आप उनसे

अकेले मिलने की प्रार्थना कर सकते हैं और बता सकते हैं कि यह ठीक नहीं लगता। मैं आशा करता हूँ कि ग्रुप लीडर उसे सुनेंगे।

जो हो गया उसे पलटा नहीं जा सकता, यह आपकी अपनी गलती है। इसका गुरु की शिक्षा से कोई लेना-देना नहीं। यह केवल उनके निर्देश न मानने का नतीजा है। आप गुरु से और उनके पास जाने वालों से प्रेम करें; प्रेम सेवा और बलिदान जानता है अगर कुछ होता है तो प्रेम उसे सुंदर बना देता है। प्रेम माफ करना और भूल जाना जानता है।

अगर आपको कुछ गलत लगता है तो आप उस इंसान के पास अकेले जाएँ और उसे स्पष्ट करें लेकिन उसे समाचार न बनाएँ इससे पार्टियाँ बनती हैं जोकि गलत है। ग्रुप लीडर आपकी मदद के लिए है, उन पर बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। वे प्रबंध करते हैं आपकी मदद करते हैं, अपना समय देते हैं कभी-कभी अपना पैसा भी खर्च करते हैं जिसके बदले में उन्हें कुछ नहीं चाहिए। वे साफ तौर पर आपको बताते हैं कि गुरु गुरु है; वे गुरु नहीं हैं।

जिसकी आँखें खुल गई हैं उसको गुरु में ही परमात्मा दिखाई देता है अगर ग्रुप लीडर और दूसरे भी इस तरह सोचेंगे तो मैं इसे सराहूँगा। आप परमात्मा को जानने के ऊँचे लक्ष्य के लिए अपना समय और मेहनत समर्पित कर रहे हैं। अगर दोनों में ईर्ष्या है वह इस जगह को छोड़कर दूर चला जाता है तो यह विज्ञान का दोष नहीं यह इसलिए है क्योंकि अभी तक हम निपुण नहीं हैं, हम रास्ते में हैं। किसी ने ज्यादा तरक्की की है किसी ने कम लेकिन हम सबको उसका मेहनताना चाहिए।

आप ग्रुप मीटिंग में जाना न भूलें अगर आप ग्रुप मीटिंग में जाना छोड़ देंगे तो आप उनसे दूर हो जाएँगे। वहाँ यही पाठ फिर

से याद कराया जाता है। आप चर्च में जाएं मुझे कोई ऐतराज नहीं। मैं आपको एक बात और कहूँगा अगर आपको कहीं और सच मिले तो मुझे बताएँ, मैं भी आपका अनुसरण करूँगा।

एक प्रेमी : *महाराज जी! मेरे साथ कल रात एक बजे कुछ अजीब-सा हुआ। मैं सो रहा था, मैं जाग गया और मैंने आपकी आवाज़ सुनी आप बहुत प्रबल आवाज में मेरा नाम पुकार रहे थे?*

महाराज कृपाल : हाँ! यह ठीक है।

वही प्रेमी : *महाराज जी! यह अच्छा है या बुरा है? मैंने अपने पूरे जीवन में केवल दरवाज़ा खटखटाने जैसी आवाजें सुनी हैं लेकिन आपकी आवाज़ बहुत साफ थी। आपकी आवाज बुला रही थी जैसे पूरे कमरे में गूँज रही हो।*

महाराज कृपालः मैं अब आपको बताता हूँ जैसा कि मैंने कई बार बताया है कि इंसान का बेटा गुरु नहीं होता। इंसान का बेटा इंसानी पोल होता है जिसमें परमात्मा गुरु के रूप में काम करता है। यह उसी परमात्मा की शक्ति है जो चारों ओर फैलती है और जिन्हें नाम मिला है उन्हें जगाती है जिनका कुछ बैकग्राउंड होता है उन्हें दिखाई भी देती है।

जब इंसान को नाम मिलता है तब गुरु, परमात्मा की शक्ति उसके अंदर रहती है। यह शक्ति सदा उसे ऊपर आने के लिए निर्देश देती रहती है। अगर आप अपना मुँह उसकी ओर करेंगे तो वह आपको राह दिखाएगा आपसे बात करेगा। वह ऐसा एक बार, दो बार, चार बार करता है अगर आप उस तरफ ध्यान नहीं देते तो आपने अपना मौका गँवा दिया लेकिन वह फिर भी वहाँ है। आप जब भी अपना मुँह उसकी ओर मोड़ेंगे, वह वहीं होगा।

वही प्रेमी : *महाराज जी! आपकी आवाज़ बहुत साफ थी उसके बाद मैं पूरी रात सो नहीं सका, मेरे कमरे में मुझे बहुत-सी हँसाने वाली और अलग तरह की चीजें मिलीं।*

महाराज कृपालः तब सबसे अच्छा है कि आप भजन पर बैठ जाएँ। कभी-कभी ऐसा होता है कि जिन्होंने गुरु का बाहरी रूप नहीं देखा होता और कभी उसके बारे में नहीं सुना होता लेकिन गुरु के मिलने से पहले ही उनमें गुरु का रूप प्रकट हो जाता है। वे हैरान होते हैं कि यह क्या है? वे जब मुझसे मिलते हैं तो कहते हैं, ''ओह! मैंने आपको तीन साल पहले देखा था।'' यह परमात्मा की शक्ति है जो दिखती है; हम सब बनाए गए हैं।

एक प्रेमी : *महाराज जी! आज जानवरों पर प्रयोग किए जा रहे हैं जिससे उन्हें कैंसर और अन्य बीमारियाँ मिल रही हैं। क्या इंसान को ऐसा करने का हक है?*

महाराज कृपाल : इंसान के जीवन को बचाने के लिए ऐसा किया जाता है अगर डॉक्टर को जानवरों पर आज़माना नहीं सिखाया गया होता तो आप कैसे बचते? ऊँची चीज के लिए आपको यह करना पड़ा लेकिन आप इस पाप से छुटकारा नहीं पा सकते।

(एक प्रेमी आकर सूचित करता है कि समय कम है, खाना तैयार है और लोगों को भूख लगी है)

महाराज कृपाल : भूख से पहले मैंने इन्हें कुछ बताना है जो बिल्कुल पक्की बात है। हो सकता है कि शारीरिक रूप में मैं आपसे फिर मिलूँ या नहीं। बिछड़ने से पहले मैं आपसे यह आशा करता हूँ कि आप हर दिन वह बढ़ाएँगे जो आपको परमात्मा की दया से मिला है। यह मुझे मेरे अंदर के परमात्मा और ऊपर बैठे परमात्मा

को सबसे ज्यादा खुश करेगा, इसे मत छोड़ना। सब कुछ छोड़कर सबसे पहले रोजाना परमात्मा को याद करें। भक्त बनें अपने आपको परमात्मा के आगे समर्पित कर दें।

परमात्मा प्यार है। परमात्मा के पास वापिस जाने का रास्ता प्रेम है। परमात्मा से प्रेम पैदा करने के लिए जो भी चाहिए वह करें। प्रेम सेवा और त्याग जानता है। प्रेम सब कुछ सुंदर बना देता है। प्रेम देना जानता है, लेना नहीं। मैं सभी से ये शब्द कह रहा हूँ, चाहे वे नामधारी हैं चाहे ग्रुप लीडर हैं चाहे प्रतिनिधि हैं। वे कुछ देने के लिए हैं कुछ लेने के लिए नहीं।

आप शारीरिक रूप से वह सब करें जो आप दूसरे लोगों की सेवा के लिए कर सकते हैं। पैसे देकर जितना कर सकते हैं करें। पहले ईमानदारी से अपने पैरों पर खड़े हो जाएं अपने परिवार को संभालें और दूसरे लोगों की मदद करें जो भूखे हैं जरूरतमंद हैं। यह सब परमात्मा के लिए करें, कुछ बाँटे। यहाँ कोई शुल्क नहीं, कोई लगान नहीं।

अगर आपके अंदर सबके लिए प्रेम होगा तो क्या भाइयों के बीच प्रेम नहीं होगा? आप ऐसे रिश्ते में बंधे हैं जो मरने के बाद भी टूट नहीं सकता। आप सब एक ही रास्ते पर परमात्मा से सीधे सम्पर्क में हैं। जब आप प्रेम में हैं तो आप किसी से नफरत नहीं कर सकते, कभी किसी का बुरा नहीं सोच सकते। आप गुरु के लिए सतसंग में आते हैं।

फिर आता है पाप रहित होना। वेदों में शादीशुदा जीवन के बारे में कहा गया है उस प्रमाण तक आने की कोशिश करें। जब आप एक के साथ शादीशुदा हैं तो एक के साथ ही शादीशुदा रहें, सबके साथ नहीं। मैं ये शब्द कहने की माफी चाहता हूँ क्योंकि मैंने

तकरीबन सभी जगह देखा है कि औरत और सोना-चाँदी ये दोनों चीजें हमारे रास्ते की सबसे बड़ी रुकावट हैं। वेद-शास्त्र कहते हैं कि अपनी कमाई से अपना जीवन निर्वाह करें, दूसरों के सहारे न रहें। जरूरतमंदों की मदद करें और पवित्र जीवन बिताएँ।

अगर प्यार है तो शब्दों में दया होगी क्रूरता नहीं होगी। अगर कुछ गलत होता है तो सोने से पहले उस झगड़े को मिटा लें, जब तक सारा झगड़ा मिट न जाए तब तक सोना नहीं चाहिए । बाईबल में कहा गया है, ''जब आप अपने भाइयों से प्यार नहीं कर सकते जिन्हें आप देख रहे हैं तो आप परमात्मा से कैसे प्रेम कर सकते हैं जिसे आप देख नहीं रहे?''

ईसा मसीह ने कहा है, ''मैं आपको एक नया आदेश देता हूँ कि आप एक-दूसरे से प्रेम करें।'' परमात्मा के इस आदेश को बढ़ाने की कोशिश करें, यह किसी इंसान का काम नहीं परमात्मा का काम है। यह सभी धर्मों का मूल सिद्धांत है कि परमात्मा के लिए जरूरतमंद, भूखों और नंगों की मदद करें। आप ऐसा तभी कर सकते हैं जब आप अपने जीवन को साधारण बना लें। अगर आप अपने पैरों पर ही खड़े नहीं हो सकते तो आप दूसरे लोगों की मदद कैसे करेंगे?

मैंने अपने एक प्रचार में कहा है, ''सरल बनें, सरल बनें और सरल बनें।'' मुझे आपसे यही चाहिए कि जब तक आपके पास यह शरीर है आप तब तक देने वाले बनें, लेने वाले न बनें। जो आदमी पवित्र है, लालची नहीं जिसके दिल में सबके लिए प्यार और नम्रता से रंगे हुए दया के शब्द हैं, ऐसे इंसान को सभी से सम्मान मिलेगा। इसका पालन करें क्योंकि इंसानी जीवन परमात्मा को जानने के लिए मिला है।

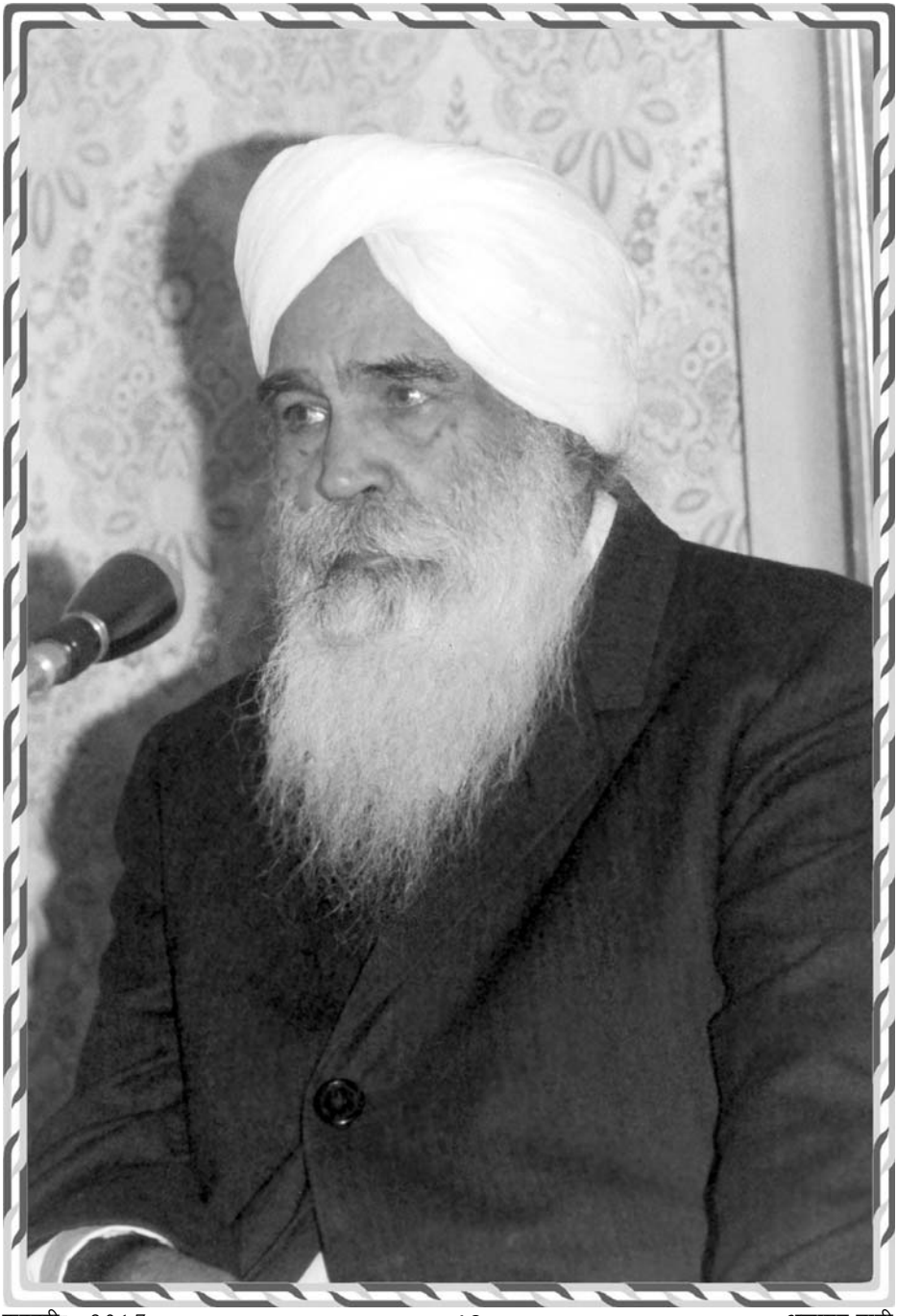

बिना माँगे ही आपके पास मदद आ जाएगी अगर बच्चा सो रहा है तो माता उसका ध्यान रखती है। अगर साँप आ जाए तो माता अपने आपको खत्म कर लेगी लेकिन साँप को बच्चे के पास नहीं जाने देगी। नाम का अभ्यास करते हुए परमात्मा की शक्ति या ईसा मसीह की शक्ति आपके साथ है, वह आपकी रक्षा करेगी। एक बच्चे को अपनी माता पर पूरा भरोसा होता है अगर शेर भी आ जाए तो भी बच्चा भागकर अपनी माँ के पास जाता है। चाहे वह शेर माँ को ही क्यों न खा जाए लेकिन बच्चे को माँ पर पूरा भरोसा होता है। अगर आपको पूरा भरोसा है तो आप पर्वत भी हिला सकते हैं। विश्वास ही सभी धर्मों का मूल कारण है।

व्यवहार से आपने देखा होगा कि आपको कुछ ऐसा मिला है जिसका वर्णन वेदों-शास्त्रों में भी है। इसे हर दिन बढ़ाएं। मैं आप सभी को सच्चाई का प्रतिनिधि होने की कामना करता हूँ। काटने के लिए अनाज बहुत सारा है मजदूर चाहिए लेकिन मजदूर आदर्श होने चाहिएं। आदर्श बनने की कोशिश करें। हर एक को आदर्श बनना चाहिए।

आप व्यवहारिक बनें। अगर हम अपने आपको पवित्र करना चाहते हैं तो सारा संसार पवित्र हो जाएगा। हम दूसरों को पवित्र करते हैं लेकिन अपने आपको नहीं यही सब परेशानियों का कारण है। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। मुझ पर गुरु परमात्मा की दया है। आपको रास्ते पर डाल दिया गया है मेरी यही कामना है कि आप उसे बढ़ाएँ।

मिस्टर खन्ना : यहाँ मैं अपने महान् गुरु का धन्यवाद करना चाहता हूँ। *(मिस्टर खन्ना ने पहले आपके गुरु बाबा सावन सिंह जी की सेवा की और बाद में महाराज कृपाल सिंह जी के प्रतिनिधियों में से एक हुए।)*

महाराज कृपाल : प्यार दर्शाने की कोई जरूरत नहीं। यह मेरा और मेरे अंदर के परमात्मा का कर्त्तव्य है। मैं आपका धन्यवादी हूँ, कृतज्ञ हूँ अगर आप उस तरह का जीवन बिताएँ जैसा मैंने आपको बताया है।

मि. खन्ना : मैं यहाँ सभी प्रेमियों का धन्यवादी हूँ, ये सब बहुत प्यारे हैं। लगता है कि यह ग्रुप उन्नति करेगा लेकिन मैं महाराज जी की एक बात से सहमत नहीं हूँ। जैसा कि महाराज जी ने कहा कि यह उनका आखिरी आना हो सकता है।

महाराज कृपाल : मैंने आपको सही बात कही है। यह सब परमात्मा के हाथ में है।

मि. खन्ना : जी सर!

महाराज कृपाल : हाँ! कभी-कभी हम उत्साह में बहुत कुछ कह देते हैं। यह परमात्मा के हाथ में है, कोई वायदा नहीं।

मि. खन्ना : महाराज जी! आप हम पर दया करेंगे फिर यहाँ आएंगे, अमेरिका में हमें भारत से कहीं ज्यादा गुरु चाहिए।

महाराज कृपाल : मैं केवल परमात्मा के कहे अनुसार यहाँ आया हूँ अगर परमात्मा की मर्जी होगी तो मैं सौ बार आऊँगा। यह उसका काम है वह खुद ही करता है। आपकी कामनाएँ प्रशंसा योग्य हैं। मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ लेकिन यह सब परमात्मा के हाथ में है। कौन जानता है कि कल, दिन या रात में क्या होगा?

मि. खन्ना : महाराज जी अभी आप जवान हैं और आप हमें दर्शन देने के लिए बहुत बार आ सकते हैं।

महाराज कृपाल : आत्मा हमेशा जवान रहती है। सवाल परमात्मा और उसकी दया का है अगर परमात्मा चाहता है तो मैं आऊँगा। आपकी यही कामना है तो परमात्मा मान सकता है।

मि. खन्ना : आप हमें जल्द दर्शन देने जरूर आएँगे। हम सब एक साथ होकर पैसे से, शरीर से और हर तरीके से आपके मिशन में मदद करेंगे जो पूरे विश्व में अपार शान्ति लाए।

महाराज कृपाल : मुझे बहुत खुशी होगी अगर आप मेरे कहे अनुसार जीवन बिताएंगे। अमीर-गरीब, ऊँच- नीच, ग्रुप लीडर, नामधारी और हम सब एक बराबर हैं। परमात्मा में हम सब भाई-बहन हैं। परमात्मा की दया है कि वह बिना किसी हरजाने के आपकी मदद करता है।

ग्रुप लीडर : मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ?

महाराज कृपाल : हाँ, कहो! एक पागल आदमी की तरह अब आपको क्या कहना है?

ग्रुप लीडर : महाराज जी! मुझे पागल कहने के लिए आपका धन्यवाद। मैं पागलों की तरह आपसे प्यार करता हूँ। मैं हमेशा अपने आपको केवल पागल कहकर ही व्यक्त कर सकता हूँ। हमारी आत्माओं को भरपूर रोशनी से उज्जवल करने के लिए आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ। हम निरंतर आपकी दया और आपकी ताकत से देख सकते हैं कि आपका काम हमारे द्वारा प्रकाशित हो क्योंकि आपने कहा है कि सारी रचना परमात्मा के काम को प्रकाशित करने के लिए है।

महाराज कृपाल : परमात्मा सबकी प्रशंसा करेगा, परमात्मा कामना करता है कि उसका नाम उज्जवल हो।

यह परमात्मा की दया है जो जिसके योग्य है वह उसे वही देता है। उसके पास सबको देने के लिए है लेकिन वह उसका इंतज़ार कर रहा है जो अपना मुँह उसकी ओर करे। पिता अपने सभी बच्चों के लिए अपने पैरों पर खड़े होने की कामना करता है।

मि. खन्ना : हम आपका जन्मदिन 25 जनवरी 1964 को वाशिंगटन में मना रहे हैं।

महाराज कृपाल : जनवरी की 25 तारीख ठीक है अगर वह तारीख बदल दी जाती है तो पहले वाली तारीख ही होगी। जो निश्चित होगा आप मुझे बाद में बता देना।

जन्मदिन के प्रश्न पर मुझे लगता है कि नामलेवा को हर सुबह, हर साँस के साथ ऐसे लोगों से मिलने की खुशी मनानी चाहिए जिसमें वह प्रकट हैं। यह केवल ऐतिहासिक है कि आप उस पाठ को दोहराने के लिए एक साथ इकट्ठे होंगे। जन्मदिन को सच्चे रूप से तब मनाया जाएगा जब आप उसके कहे अनुसार जिएं।

ज्यादातर धार्मिक रीति-रिवाज बन जाते हैं। मुझे लगता है कि जन्मदिन का सबसे बड़ा उत्सव मेरे गुरु की दया से है। जन्मदिन के रूप में सब कुछ आता है लेकिन इसे हर दिन मनाएं।

मि. खन्ना : इतिहास में ऐसा पहली बार होगा कि किसी जीवित गुरु का जन्मदिन अमरीका में मनाया जाएगा। जो आना चाहते हैं उन सबका स्वागत है।

(महाराज कृपाल का असली शारीरिक जन्मदिन 6 फरवरी है। 25 जनवरी इसलिए रखा गया कि उनके भारत आने से पहले पश्चिम में भी महाराज जी का जन्मदिन मनाया जा सके।)

***

7 जनवरी 1964

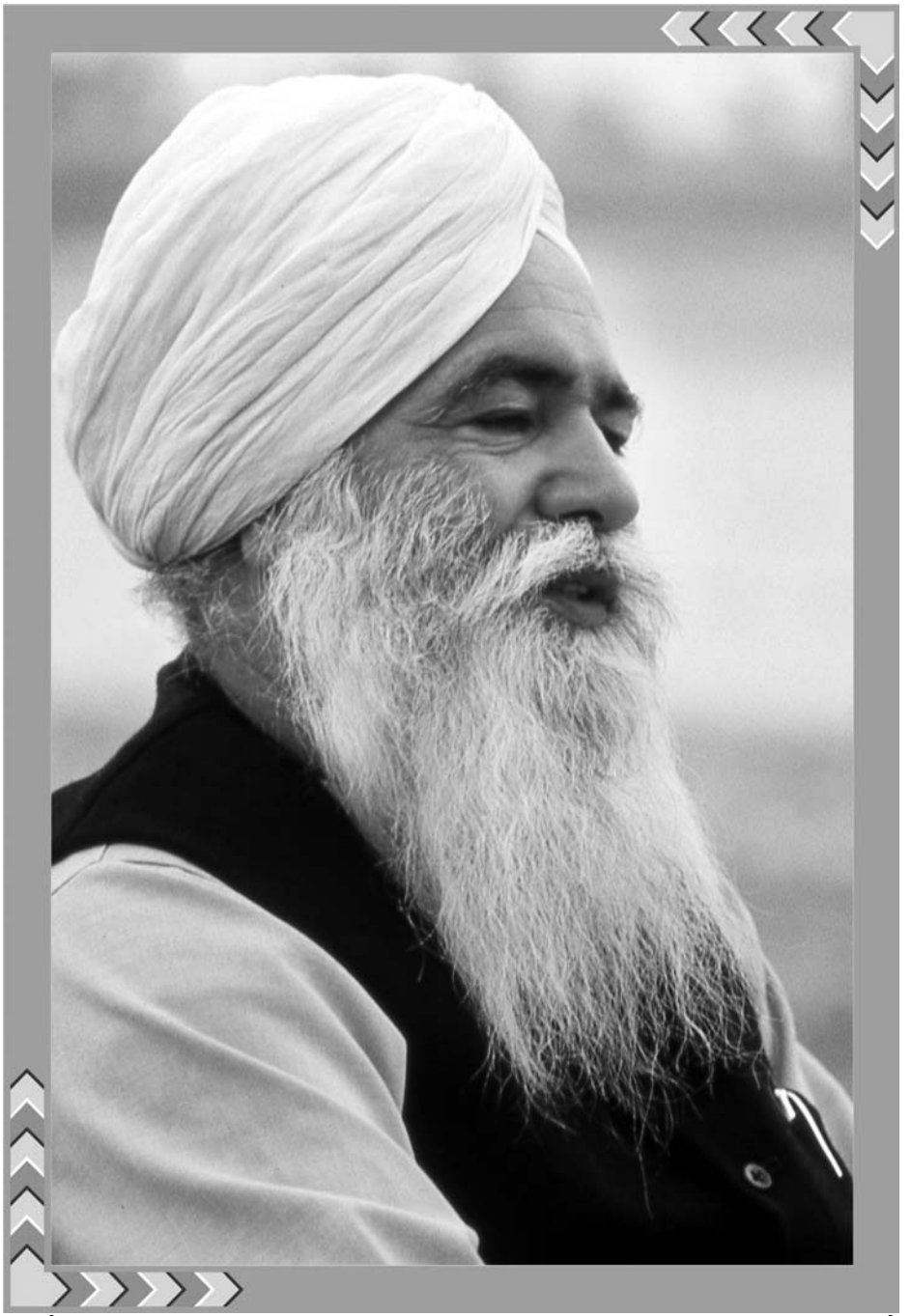

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सुखों–दुखों की नगरी

स्वामी जी महाराज की बानी DVD-550 रिबोला, इटली

आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है। यह शब्द समझने वाला है, मन को टिकाकर गौर से सुनें। सन्त–महात्माओं की बानी बहुत कीमती होती है। सब महात्मा यही बताते आए हैं कि प्रभु ने इंसान का जामा अपनी भक्ति के लिए, नाम की प्राप्ति के लिए दिया है। बहुत थोड़े आदमी ही नाम की प्राप्ति करते हैं, गुरु की भक्ति में लगते हैं अगर हम इस मौके को हाथ से निकाल देते हैं फायदा नहीं उठाते तो हमें फिर इस **सुखों–दुखों की नगरी** में आना पड़ता है।

जीव को माता के गर्भ में नौं महीने उल्टा लटकना पड़ता है। यह जीव माता के पेट में बहुत तंग और गंदी जगह में प्रायश्चित करता है प्रभु के आगे प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! मुझे एक मौका दे। मैं इस मौके का फायदा उठाऊँगा बाहर निकलकर तेरी भक्ति करूंगा, तेरा भजन करूंगा और तेरे नाम का तोशा इकट्ठा करूंगा लेकिन जन्म लेने के बाद यह अपने मकसद को भूल जाता है। प्रभु इसे जो अवसर देता है यह उस अवसर को अपने हाथ से खो देता है।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''माता के पेट में शब्द इसकी रक्षा करता है। यह उल्टा लटका होता है लेकिन इसका ध्यान तीसरे तिल पर प्रभु के शब्द की आवाज के साथ जुड़ा होता है।''

मात गर्भ दुख सागरों भारे तें अपना नाम जपाया।

महात्मा बताते हैं आपने कभी ठंडे दिल से सोचा है कि माता के गर्भ में हम बेसहारा होते हैं अगर माता कोई गलत काम करती है तो उसका असर बच्चे पर पड़ता है अगर माता गलत खाना खा लेती है तो भी बच्चे पर असर पड़ता है। क्या यह दुख नहीं, यह किसे अपना दर्द बता सकता है? वहाँ सिर्फ प्रभु का ही सहारा होता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

मुख तले पैर उपरे वसंदे कुहथड़े थाओं।
नानक सो धनी क्यों विसारया उदरे जिसदा नाओं।।

जिस घर में बच्चे का जन्म होता है उस घर में खुशी की लहर दौड़ जाती है। यह चारपाई पर पड़ा आँखों से नए–नए नजारे देखता है, उन खुशियों को देखकर खुश होता है। माता–पिता खुशी मनाते हैं उनके प्यार और मोह में फँसकर यह फिर प्रभु के दिए मौके को हाथ से खो देता है।

बचपन खेलकूद व खानपान में नष्ट कर देता है, जवानी विषय–विकारों में खराब कर देता है। बुढ़ापे में बीमारियां और चिन्ता घेर लेती हैं आखिर कोई न कोई बीमारी शरीर को नकारा कर देती है। बूढ़े हो जाते हैं नकारे हो जाते हैं, मौत आकर गला दबा देती है। हमने जिन भाई–बहनों, रिश्तेदारों के साथ सारी जिंदगी प्यार किया होता है उनमें से कोई भी हमारी मदद नहीं कर सकता अगर वे रोते हैं तो अपनी गर्ज की खातिर या मोह की वजह से ही रोते हैं लेकिन जाते हुए को कोई रख नहीं सकता बड़ी जल्दी अग्नि या मिट्टी के हवाले कर देते हैं।

सन्त–महात्मा यह नहीं कहते कि आप बाल–बच्चों और घर बार को छोड़ दें या धर्म परिवर्तन कर लें। आपको परिवार की

जो जिम्मेवारियां मिली हैं वह फर्ज भी पूरा करें। जिस प्रभु ने हमें जन्म दिया है हमारी विनतियां सुनी हैं उस प्रभु की भक्ति करें और इंसानी जामें में उसके साथ मिलाप करें।

सन्त–महात्माओं ने मेहनत की, कमाई करके अंदर गए अपने जीवन काल में प्रभु के साथ मिलाप किया। अपनी सच्चाईयों को धर्मग्रंथों में बयान किया वह सच्चाई यह है कि दुनिया की रचना अपने आप नहीं चल रही इसका कोई रचयिता भी है इसके पीछे प्रभु का गुप्त हाथ काम करता है। प्रभु ने दुनिया की जो वस्तुएं बनाई हैं ये सब परिवर्तनशील हैं। दुनिया की सब चीजें बदलती हैं लेकिन एक वह प्रभु परमात्मा आदि–जुगादि से सच चला आ रहा है। सच से मतलब जो कभी न बदले सदा ही कायम रहे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

आदि सच जुगादि सच है भी सच नानक होसी भी सच।

वह परमात्मा पहले भी था आज भी है और आगे भी उसी परमात्मा ने रहना है। महात्मा सच्चाई बताते हैं कि प्यारेयो! दुनिया हमारा घर नहीं यह **सुखों–दुखों की नगरी** है, परेशानियों का देश है। इस रचना में पता नहीं! सुख कब दुख में तब्दील हो जाने हैं कब मौत के फरिश्ते ने हमें कान से पकड़कर ले जाना है? इसलिए महात्मा हमें होका देते हैं कि आप इंसानी जामें से तभी पूरा फायदा उठा सकते हैं अगर आप इसमें बैठकर 'शब्द–नाम' की कमाई करें; यह अधिकार सिर्फ इंसानी जामें को ही है।

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि जिस शरीर को हम सारी जिंदगी पालते पोसते हैं सँवारते हैं इसमें बैठकर इंसान को

इंसान नहीं समझते बहुत अंहकार करते हैं। यह शरीर भी आपका नहीं किराए का मकान है एक दिन यह हमसे छिन जाना है। कबूतर बिल्ली को देखकर आँखें बंद कर लेता है लेकिन थोड़ी देर बाद वह अपने आपको बिल्ली के मुँह में पाता है।

इसी तरह हम मौत को जरूर भूल जाते हैं कि शायद मौत और लोगों के लिए है हाँलाकि हम अपने प्यारे मित्रों, सज्जनों को खुद श्मशान घाट उठाकर ले जाते हैं कंधा भी देते हैं लेकिन अपनी मौत को भुलाए बैठे हैं। हम कहते हैं कि मौत तो और लोगों के लिए है हमारे लिए तो ऐश–ईशरतें, शराबों–कबाबों की लज्जतें ही हैं। गौर से सुनें इस शब्द में स्वामी जी महाराज इस मुत्तलिक ही समझा रहे हैं:

अटक तू क्यों रहा जग में। भटक में क्या मिले भाई।।

आप प्यार से कहते हैं, ''तू संसार में आकर विषय–विकारों में लगकर क्यों अटक गया है, तूने दुनिया के भोगों को मित्र क्यों बनाया हुआ है? हमारी आत्मा जब से उस प्रभु से बिछड़ी है यह भटकती फिर रही है इसे न दिन में चैन है न रात में चैन है।'' सहजो बाई कहती हैं:

धनवंते अति ही दुखी निर्धन दुख का रूप।
साध सुखी सहजो कहे जिन पाया भेद अनूप।।
न सुख विद्या के पढ़े न सुख वाद विवाद।
साध सुखी सहजो कहे जिन लग्गे सुन्न समाध।।

तुलसी साहब कहते हैं:

कोई तो तन मन दुखी कोई नित उदास।
एक एक दुख सबन को सुखी सन्त का दास।।

महात्मा हमें बताते हैं कि इस कर्म भूमि दुनिया में आकर हर एक अपने–अपने कर्मों में फँसा हुआ है, दुख–दर्दों की परेशानियों में कराह रहा है। फिर भी हमारा भूला मन प्रभु की भक्ति की तरफ नहीं आता। कबीर साहब कहते हैं:

देहधरी का दंड सब काहू को होय।
ज्ञानी भोगे ज्ञान से अज्ञानी भोगे रोय।।

आप कहते हैं, ''यह काल की नगरी **सुखों–दुखों की नगरी** है। आप इससे ऊपर उठें कोई यह नहीं कह सकता कि यह संसार कब का बना है। हम कितनी बार इस संसार में आए और अब तक हम कितने जामें पा चुके हैं। पता नहीं पहले हम कितनी पत्नियां बनाकर छोड़ आए और कितने पति बनाकर छोड़ आए। हमने कितने घर बसाए, कितने माता–पिता बनाए या कितनों के माता–पिता बने होंगे।''

खटक तू धार अब मन में। खोज सतसंग में जाई।।

आप कहते हैं, ''दिल में प्रभु को जगह दें प्रभु के लिए विरह पैदा करें। इस सबके लिए सतसंग की जरूरत है क्योंकि सतसंग में जाकर हमें हमारी गलतियों का और दिशा का पता लगता है कि हम गलत जा रहे हैं या सही जा रहे हैं।''

महात्मा सतसंग में नाम की महिमा गाते हैं, नाम मिलने के और इंसानी जामें के फायदे बताते हैं। अगर हम भटककर इस जामें को खो देते हैं तो वे इसका नुकसान भी बताते है। महात्मा सतसंग में बैठकर किसी की निन्दा नहीं करते और न ही हमें निन्दा करने में लगाते हैं। महात्मा तो हमें यह कहते हैं कि जो

किसी की निन्दा करते हैं वे अपना ज्यादा से ज्यादा नुकसान करते हैं। महात्मा सबको इकट्ठे बिठाकर शब्द के साथ जोड़ते हैं। वे प्रभु के साथ जोड़ने के लिए ही आते हैं अलग करने या तोड़ने के लिए नहीं आते। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

होय एकत्र मिलो मेरे भाई दुविधा दूर करो लिव लाई।
हर नामे की होवो जोड़ी गुरुमुख बैठो सफा बिछाई।।

विरह की आग जब भड़के। दूर कर जगत की काई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जिस तरह हम बाहर आरती करते हैं थाली में दीपक रखते हैं उनमें तेल डालते हैं, यह हम एक रस्म पूरी करते हैं लेकिन सच्ची आरती सच्ची प्रार्थना विरह का थाल शब्द की जोत है। जब किसी प्रेमी का अंदर गुरु के साथ मिलाप नहीं होता तो उसके अंदर अपने आप ही विरह पैदा हो जाती है। जब विरह पैदा हो जाती है तब दुनिया की लोक–लाज और विषय–विकार पर लगाकर उड़ जाते हैं जिस तरह दीपक की लाट के ऊपर सारे पतंगे जल जाते हैं।''

लगा लो लगन सतगुरु से। मिले फिर शब्द लौ लाई।।

बुल्लेशाह बहुत आलिम–फाजिल था, लाहौर की मस्जिद का मुल्ला था। उसका पिता भी मुल्ला था। यह उनका पुश्तैनी रोजी–रोटी का साधन था। मैं बताया करता हूँ कि जब प्रभु दया करता है दरगाह में फैसला करता है कि मैंने इसे अपने साथ मिलाना है जहाँ वह दुख–सुख लिखता है वहाँ सतगुरु का मिलाप भी लिखता है कि इसे कब गुरु मिलेगा? कब नाम मिलेगा या इसे कब गुरु पर भरोसा आएगा? यह सब कुछ लेखे में ही होता है। विरह उस

समय ही पैदा होती है जब हम सारे सहारे छोड़ देते हैं, बेसहारा होकर उसे पुकारते हैं जो उस समय हमें सहारा दे सके।

जब बुल्लेशाह का किसी सतसंगी के साथ मिलाप हुआ तो बुल्लेशाह ने उससे पूछा, ''प्यारेया! मुझे किसी पूरे गुरु की जानकारी दे जो मेरे दिल की प्यास बुझा सके।'' उस सतसंगी ने ईनायत शाह की जानकारी दी। ईनायत शाह खेती–बाड़ी का काम करते थे, आप ज्यादा पढ़े–लिखे नहीं थे। सन्तों के समझाने के अपने ही तरीके होते हैं। ईनायत शाह ने थोड़ी सी बात में ही समझा दिया। उस समय ईनायत शाह प्याज की खेती कर रहे थे। प्याज एक तरफ से निकालकर दूसरी तरफ लगा रहे थे। बुल्लेशाह ने ईनायत शाह से कहा, ''महाराज! मुझे परमात्मा को प्राप्त करने का तरीका बताएं?'' ईनायत शाह ने कहा, ''मन को दुनिया की तरफ से हटाकर गुरु परमात्मा के साथ जोड़ना है।''

बुल्लेया रब दा की पावंणा, एदरो पुट्टणा ते ओदर लावणा।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप गुरु के साथ लग्न लगा लें, नाम रूप गुरु का ध्यान करें, गुरु के साथ प्यार करें। आप सच्चखंड वासी गुरु के साथ जितना प्यार करेगें उतनी ही ज्यादा तरक्की कर सकेंगे।'' कबीर साहब कहते हैं:

ब्रह्म बोले काया के ओले काया बिन ब्रह्म क्या बोले।

सन्त 'शब्द–रूप' स्वरूप भी रखते हैं जिसमें वह सदा रहते हैं देह तो उन्होंने हमें समझाने के लिए धारण की होती है। महात्मा हमें बताते हैं अगर परमात्मा किसी देवी–देवता के रूप में आता तो हम उसे देख न सकते। अगर गाय–भैंस के रूप में

आकर हमें समझाता तो हम उसकी बोली न समझ सकते। वह इंसानों में इंसान बनकर आता है क्योंकि अपने जैसे के साथ कुदरती प्यार होता है।

आज तक जितने भी ऋषि–मुनि, सन्त–सतगुरु, पीर–पैगम्बर संसार में आए सभी इंसानी जामा धारण करके आए। जो आत्माएं उनके संपर्क में आई जिन्होंने महात्माओं के कहे मुताबिक शब्द–नाम की कमाई की महात्माओं ने उनकी जिम्मेवारी ली और उन्हें अपने साथ ले गए। वे आज इस **सुखों–दुखों की नगरी** में हाजिर नहीं हुए अगर इस दुखी संसार में चक्कर ही लगाने हैं तो महात्मा के पास जाने का क्या फायदा?

छुटेगा जन्म और मरना। अमर पद जाय तू पाई।।

'शब्द–नाम' की कमाई करने से आपका जन्म–मरण खत्म हो जाएगा। आपको परमपद मिल जाएगा वहाँ न मौत है न पैदाईश है; वहाँ शान्ति ही शान्ति है।

भाग तेरा जगे सोता। नाम और धाम मिल जाई।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमारे ऊँचे भाग्य हों हमारा ख्याल नाम की तरफ आए, हमें नाम मिले। नाम का यह फायदा है कि हमें वह धाम मिल जाता है जहाँ से हमारी आत्मा बिछड़ी थी।''

कहूं क्या काल जग मारा। जीव सब घेर भरमाई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैं क्या कहूँ? काल ने सब जीवों को भ्रम में डाला हुआ है, भ्रम के वस सब जीवन व्यतीत कर जाते हैं। भ्रम क्या है? हम जो कुछ भी आँखों से देखते हैं

इस सबने हमारे साथ नहीं जाना। यहाँ तक कि हमने अपनी देह को भी यहीं छोड़कर चले जाना है।''

नहीं कोइ मौत से डरता। खौफ जम का नहीं लाई।।

आप कहते हैं, ''हम दुनिया के जीव काल के बहकावे में आकर अपनी मौत को भूल चुके हैं। हमने यमों का डर भी भुला दिया है।'' हम सोचते हैं कि हम दुनिया में आकर जो मर्जी करें हमसे किसने पूछना है?

ऐह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा।

पड़े सब मोह की फाँसी। लोभ ने मार धर खाई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''काल ने सबके ऊपर मोह का फंदा डाला हुआ है। मेरी पत्नी है मेरे बच्चे हैं मैं धनी हूँ लेकिन प्रभु–परमात्मा को ही पराया समझा हुआ है।''

चेत कहो होय अब कैसे। गुरु के संग नंहि धाई।।

इस जन्मों–जन्मों से सोए हुए को किस तरह जाग आए! यह गुरु की सोहबत संगत में जाने के लिए भी तैयार नहीं, कहता है कि समय नहीं है अगर समय मिल भी जाए फिर भी नींद और विषय–विकार प्यारे हैं।

काम और क्रोध बिच बिच में। जीव से भाड़ झोंकवाई।।

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँच ताकतें हैं लेकिन काम और क्रोध बहुत जबरदस्त ताकत है ये जीव को कुराहे में डाले रखती हैं। क्रोध से ख्याल फैल जाते हैं। काम से आत्मा नाम के काबिल नहीं रहती नीचे गिर जाती है।

कबीर साहब कहते हैं कि कामी, क्रोधी, लालची भक्ति नहीं कर सकता। भक्ति कोई सूरमा ही कर सकता है।

गुरु बिन कोई नहीं अपना। जाल यह कौन तुड़वाई।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''तू बता! मौत के समय धन–दौलत मदद करेगा, समाज मदद करेगा? एक गुरु ही है जिसने नाम दिया है लेकिन उसके साथ हमारा दिखावे का ही प्यार है।'' सन्त किसी के ऊपर अपना बोझ नहीं डालते, सेवक से एक पाई की भी आशा नहीं रखते। सतगुरु सेवक से शब्द–नाम की कमाई की ही आशा रखते हैं कि आप भजन करके मेरे पास लाएं।

जो आपके ऊपर एहसान न करे आपके ऊपर बोझ न डाले क्या वह सेवादार बुरा लगता है? गुरु बहुत दयालु होता है। उसने नाम दिया है मौत के वक्त दया का सागर उछल पड़ता है। उस मुश्किल समय गुरु अपने सेवक की संभाल जरूर करता है।

महात्मा का जातिय तजुर्बा है कि जो लोग शान्त रहते हुए कमाई करते हैं वे बहुत शान्ति से चोला छोड़ते हैं। उन्हें गुरु पहले ही बता जाता है कि मैं तुझे कब लेकर जाऊँगा अगर हम उस समय गुरु की तरफ तवज्जो न दें गुरु फिर भी संभाल करता है लेकिन हम घबराहट में ही संसार से चले जाते हैं।

कुटुम्ब परिवार मतलब का। बिना धन पास नंहि आई।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''कुटुम्ब परिवार सब मतलब के हैं अगर हमारे पास धन पदार्थ और मान बड़ाई है तो सब आकर जी–जी करते हैं अगर धन पदार्थ न हो तो कोई राजी–खुशी भी नहीं पूछता।''

22 मई 1989

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक अनमोल संदेश

रक्षक

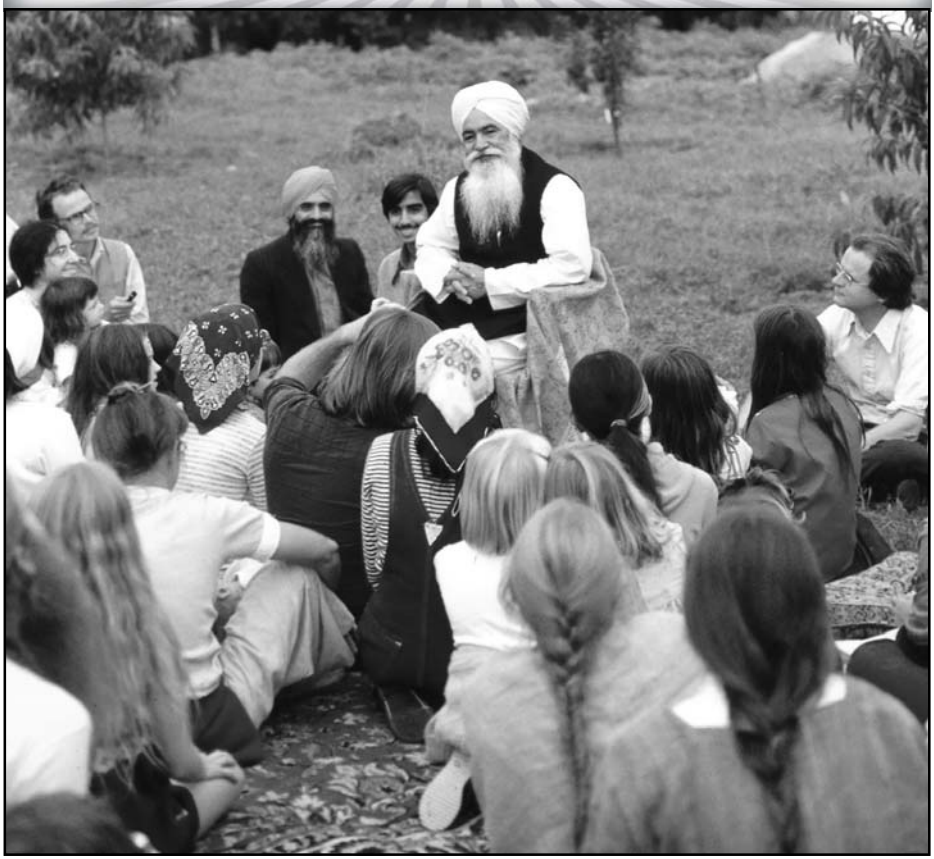

जिसे परमात्मा रखे उसे दुनिया की कोई भी ताकत नहीं मार सकती। इस संसार में वही मरा हुआ है जिसे परमात्मा बिसार दे अपनी भक्ति का दान न दे और अपना प्यार न बख्शे।

एक हिरनी गर्भवती थी, आराम से सोई हुई थी। शिकारी को पता लगा तो उसने एक तरफ जाल बिछा दिया, दूसरी तरफ शिकारी कुत्ता खड़ा कर दिया। तीसरी तरफ आग लगा दी और चौथी तरफ

खुद तीर कमान लेकर खड़ा हो गया। जब हिरनी को आग का सेक महसूस हुआ तो वह उठी। उसने देखा कि एक तरफ जाल, दूसरी तरफ शिकारी कुत्ता, तीसरी तरफ आग और चौथी तरफ शिकारी खुद तीर कमान लिए खड़ा है।

हिरनी ने परमात्मा के आगे फरियाद की, ''एक तो मुझे प्रसव का दुख है, उसके साथ एक दुख और आ गया।'' पशु-पक्षी भी अपनी जुबान से परमात्मा को याद करते हैं। हम जानते हैं कि दुख के समय सहज स्वभाव ही परमात्मा की तरफ ख्याल चला जाता है। उस समय हिरनी ने परमात्मा को याद किया, परमात्मा ने उसकी सहायता के लिए बड़े जोर से तूफान चलाया।

तूफान से आग उड़कर जाल पर गिर गई, जिससे जाल जल गया। जब शिकारी तीर चलाने लगा, उस समय जमीन में से साँप निकला, साँप ने शिकारी को काट लिया। शिकारी का हाथ हिलने से तीर कुत्ते को जाकर लगा, हिरनी आजाद हो गई। शिकारी के सारे फंदे नाकाम हो गए। जाल जल गया, कुत्ता मर गया, शिकारी को साँप ने डस लिया।

कहने का भाव परमात्मा जिसका **रक्षक** है उसे कोई नहीं मार सकता। जो भी परमात्मा को याद करता है परमात्मा उसकी रक्षा के लिए जरूर पहुंचता है।

परमात्मा सबका **रक्षक** है परमात्मा सब पर दया करता है। अफसोस! हम परमात्मा को छोड़कर किसी और की पूजा करें, किसी और से मदद माँगे। कोई और पूजा के काबिल, मदद के काबिल है ही नहीं।

***

अमृतवेला

सिमरन करो सदा दिन-राती।

हाँ भाई! हमें पता ही है कि हम यहाँ किस मकसद के लिए इकट्ठे हुए हैं। महाराज सावन सिंह जी सुबह के वक्त को बहुत सुहावना बताया करते थे क्योंकि हम सोकर उठे होते हैं इस वक्त दुनिया के सारे ख्याल भूले हुए होते हैं। शरीर ताजा होता है और आत्मा ने भी शरीर में नया-नया प्रवेश किया होता है। हमें इस मौके से पूरा फायदा उठाना चाहिए।

मैं संगत में हमेशा ही दो-तीन बातें दोहराया करता हूँ कि मन को शान्त करें शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। हमारे अंदर दुनिया के संकल्प-विकल्प उठ रहे हैं कभी कोई ख्याल आता है तो कभी कोई ख्याल आता है। अगर आप मन को जवाब देकर बैठेंगे दुनिया के बारे में नहीं सोचेंगे तो मन शान्त होगा।

अभ्यास को कभी बोझ न समझें। हम किसी दुनियादार आदमी का काम प्रेम-प्यार से करें तो वह खुश होता है अगर हम गुरु परमात्मा का बताया हुआ काम प्रेम-प्यार से करें तो हम गुरु परमात्मा की खुशी भी प्राप्त कर सकते हैं। शहरों में हमें बहुत अच्छा ज्ञान मिलता है कि हर आदमी अपनी कार को बिना किसी झिझक के दौड़ाता जाता है, वह इधर-उधर ध्यान नहीं करता उसका ध्यान अपनी मंजिल की तरफ होता है। वह जानता है कि मैंने अपनी मंजिल पर पहुँचना है।

हमें भी बाहर की किसी भी आवाज की तरफ तवज्जो नहीं देनी चाहिए। हमें हमारे गुरुओं ने जो मंजिल बताई है उसकी

तरफ ध्यान देना चाहिए कि हमारा समय खराब न हो हम जल्दी मंजिल पर पहुँचे। तीसरे तिल का अभ्यास के साथ अंदर जाने से गहरा ताल्लुक है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जे को पावे तिल का मान।

हमें अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करना है क्योंकि हमारे घर जाने का दरवाजा तीसरा तिल है। तीसरा तिल दोनों भौंओ के बीच में वह जगह है जहाँ बीबीयां या पंडित लोग तिलक लगाते हैं। हमने उस जगह एकाग्र होना है इधर-उधर नहीं भटकना।

क्राईस्ट ने कहा था, ''मेरे पिता के घर में अनेकों ही भवन हैं। उस पिता ने हमें अपने भवन से बाहर निकाला हुआ है अगर हम प्यार से उस दरवाजे को खटखटाएंगे तो वह अंदर से दरवाजा खोल देगा।'' सन्त-सतगुरु हमें सिमरन देते हैं अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करने के लिए कहते हैं। सिमरन करके हम एक किस्म का दरवाजा खटखटा रहे होते हैं।

परमात्मा गुरु नामदान देने के समय हमारे अंदर बैठ जाता है। जब वह देखता है कि ये मेरे लिए ही दरवाजा खटखटा रहे हैं तो वह फौरन दरवाजा खोलकर हमें अपनी गोद में ले लेता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''उसकी सबसे बड़ी रीत यह है अगर वह किसी को एक बार गोद में ले लेता है फिर उसे बिछोड़ता नहीं।''

परमात्मा ने जिस वस्तु की खोज के लिए हमें इंसानी जामा दिया है, वह वस्तु हमें अंदर से ही मिल जाएगी। उस वस्तु को प्राप्त करने के लिए हमें बाहर के किसी रीति-रिवाज कर्मकांड को करने की जरूरत नहीं, ख्याल को बाहर से हटाकर तीसरे तिल पर एकाग्र करना है; वह वस्तु हमारे अंदर ही है। हाँ भाई बैठो।

***

मासिक पत्रिका प्राप्त करने के लिए आवश्यक सूचना

गुरु प्यारी साध संगत,

बाबा जी की अपार दया से सन् 2003 से हिन्दी मासिक पत्रिका **अजायब बानी** का प्रकाशन हो रहा है, जिससे हम सब लाभ उठा रहे हैं।

जो प्रेमी यह पत्रिका डाक द्वारा प्राप्त कर रहे हैं उनसे प्रार्थना की जाती है कि वे सूचित करेंगे कि उन्हें पत्रिका हर माह समय पर मिल रही है, उनका पता ठीक है? आप यह सूचना इस तरह दे सकते हैं:

1. आप फोन न.– 99 50 55 66 71 पर बात करके सूचित कर सकते हैं या whatsapp कर सकते हैं।

2. आप फोन न.– 98 71 50 19 99 पर sms कर सकते हैं।

3 आप dhanajaibs@gmail.com पर mail कर सकते हैं।

4 आप सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335039 जिला श्री गंगानगर(राजस्थान) पर पत्र लिखकर भी सूचित कर सकते हैं।

सूचित करते समय कृपया अपना SN# अवश्य बताएं। आपका SN# लिफाफे के दाँई तरफ लिखा हुआ है। यह पत्रिका हर माह की एक तारीख को श्री गंगानगर से डाक द्वारा भेजी जाती है।

अगर आपकी तरफ से कोई सूचना नहीं मिलती तो यह समझा जाएगा कि आपको डाक प्राप्त नहीं हो रही। डाक जारी रखने के लिए आवश्यक है कि आप सूचित करें।

धन्यवाद

आपके आभारी

प्रेम प्रकाश छाबड़ा

फोन – 99 50 55 66 71

धन्य अजायब

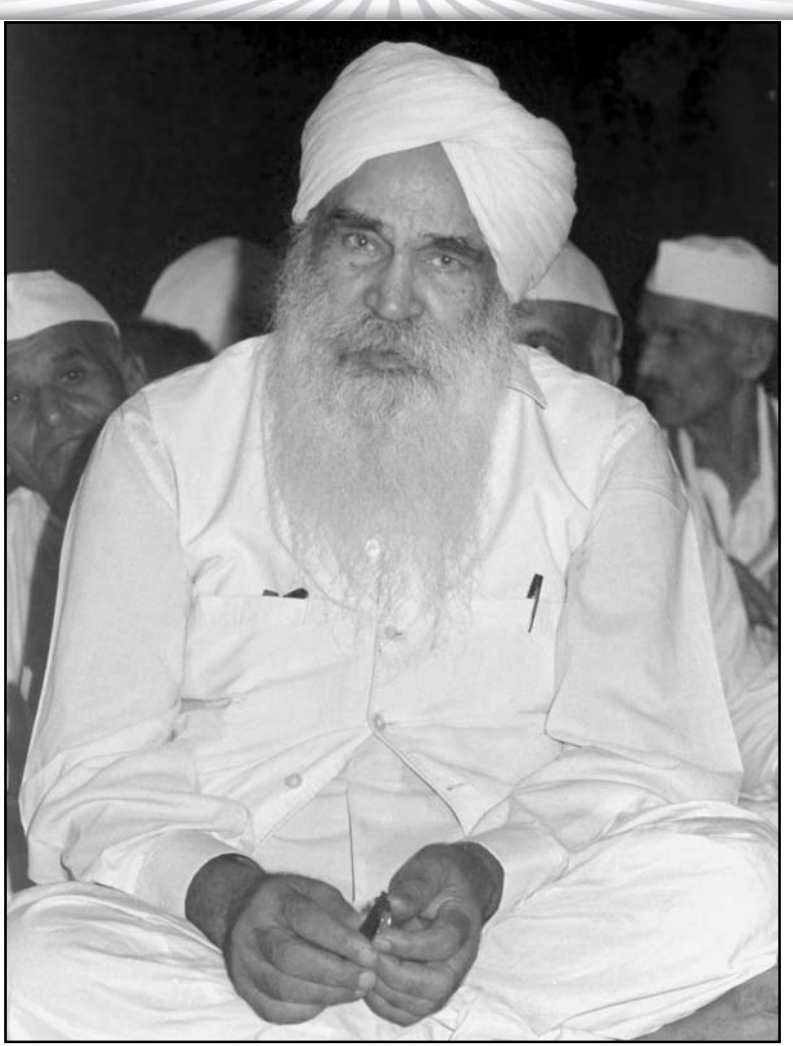

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:

03, 04 व 05 मार्च 2017

31 मार्च, 01 व 02 अप्रैल 2017